RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 40 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 16 दिसम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 40, 13-16 दिसम्बर 2018 तदनुसार 1 पौष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

चित्ति, उक्ति, कृति की एकता

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

-यजुः १०।१९१।२

शब्दार्थ-यथा = जैसे **पूर्वे** = पूर्ववर्ती अथवा पूर्ण **देवाः** = विद्वान् **सं+जानाना** = भली प्रकार जानते हुए **भागम्** = सेवन करने योग्य मोक्ष, प्रभु की **उपासते** = उपासना करते हैं, वैसे ही तुम सब **सं+गच्छध्वम्** = एक-सा चलो, **सं वदध्वम्** = एक-सा बोलो। **वः + जानताम्** = तुम ज्ञानियों के **मनांसि** = मन **सम्** = एक-समान हों।

व्याख्या-ऋग्वेद [१०।१९१।१] में भगवान् से प्रार्थना की गई है कि प्रभो! हमें धन दो। भगवान् ने तीन मन्त्रों में धन-साधन का उपदेश दिया है। उन तीनों में से यह पहला मन्त्र है। भगवान् का आदेश है-

१. सं गच्छध्वम्= तुम सब एक-सा चलो, अथवा एक-साथ चलो। किसी कार्य की सिद्धि के लिए कार्य करने वालों की चाल, गति भिन्न-भिन्न होगी, तो कार्यसिद्धि में बड़ी बाधा आ खड़ी होगी, अतः सभी की गति, कृति, आचार एक-सा होना चाहिए।

२. वदध्वम्= तुम सब एक-सा बोलो। चाल की समानता के लिए बोल की समानता अत्यन्त आवश्यक है। बोली=भाषा के भेद के कारण बहुधा विचित्र किन्तु निरर्थक झगड़े हुए हैं। एकता स्थापित करने के लिए एक भाषा का होना अत्यन्त आवश्यक है। एक भाषाभाषी एक गुट बना लेते हैं, प्रायः उनका दूसरी भाषा बोलने वालों से सम्पर्क न्यून ही रहता है, फलतः उनसे उचित सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाता, अतः मनुष्यों की बोली, भाषा, उक्ति, उच्चार एक-सा होना चाहिए।

३. सं वो मनांसि जानताम्= तुम ज्ञानियों के मन एक-समान हों। एक-जैसा बोल तभी हो सकता है, जब मनों के भाव एक-से हों, अर्थात् जब तक मनुष्यों का ज्ञान, विचार एक-सा न हो, तब तक उच्चार और आचार की एकता असम्भव है। उच्चार और आचार का मूल विचार है, क्योंकि जो कुछ मन में होता है, वही वाणी पर आता है और जो वाणी से बोला जाता है, वहीं कर्म में परिणत होता है। पूर्ण विद्वान् सदा ही एक-सा व्यवहार करते हैं। अथर्ववेद [६।६४।१] में भी इसी प्रकार का मन्त्र है। उसके पूर्वार्द्ध में थोड़ा-सा भेद है। उसे यहाँ उद्धृत करते हैं-**'सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम्'**-एक-सा चलो, एक-साथ मिलो। तुम सब ज्ञानियों के मन एक-समान हों।

ऋग्वेद में 'संवदध्वम्' है, अथर्ववेद में 'संपृच्यध्वम्' है। इस एक शब्द के भेद ने बहुत ही चमत्कार किया है। ज्ञानीजन यह कह सकते हैं कि अपने ज्ञान द्वारा विचार में समानता उत्पन्न करके उच्चारों, आचारों में समानता ला दें, किन्तु अज्ञानियों के विचारों में एकता नहीं हो सकती। अथर्ववेद के मन्त्र में उसी का साधन बताया है-तुम सब इकट्ठे चलो, और एक-दूसरे के साथ मिल जाओ, तब ज्ञानियों के समान तुम्हारे विचार भी एक-से हो जाएँगे। ऋग्वेद में साध्य पहले कहा है। अथर्ववेद में उन्हीं शब्दों द्वारा, केवल एक शब्द का भेद करके, साधन-सिद्धि का उपाय बतला दिया है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पापों से बचें

ले.-मृदुला अग्रवाल, 19 सी सरत बोस रोड कोलकाता

मनुष्य अपने सम्मुख जगद्रक्षक परमात्मा को साक्षात् जानकर ''पापों से बचे'' और सब प्राणी अज्ञान तथा वैर छोड़कर परस्पर मित्रवत् रहें। ''पाप के त्याग से सुख लाभ होता है।'' प्रत्येक मनुष्य को ऋषि, मुनि, धमात्माओं आदि के अनुकरण से वेदज्ञान प्राप्त करके पापों का नाश करना चाहिए। पाप को छेदने में समर्थ परमेश्वर ने वेदज्ञान दिया भी इसीलिए है।

''मनुष्य वेदज्ञान प्राप्ति से ऐसा प्रयत्न करे कि आत्मिक, शारीरिक और दैवी विपत्तियों एवं मूर्खों के दुष्ट आचरणों से पृथक् रहे तथा न कभी कोई पाप करे जिससे परमेश्वर वा राजा उसे दण्ड न देवे, किन्तु सुशीलता के कारण संसार के सब पदार्थ आनन्दकारी हों।''

-अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-१०, मन्त्र-५।।

जो विभिन्न पीड़ाओं से, ज्वर आदि रोगों से पापियों को दण्ड देता है, उस न्यायी जगदीश्वर का स्मरण करते हुए हम पापों से बच सकते हैं। जैसे, मलिन वस्त्र जल से शुद्ध होते हैं, वैसे ही पापी मनुष्य भी ब्रह्मज्ञान द्वारा पापों से छूटकर शुद्धात्मा हो जाते हैं। वे पाप कर्म छोड़ने से सर्वहितकारी, विशाल समुद्र के समान गम्भीर परमेश्वर के कोप से डरकर पाप न करके, परमात्मा के उपकारों को विचारकर उपकारी बनकर जीवन भर आनन्द भोगते हैं। परमेश्वर अपने सर्वज्ञापन से पापी को उसके कर्मानुसार फल देते हैं। कुपथ पर चलने वाले पापी को दु:ख और सुपथ पर चलने वाले लोगों को ईश्वर के रचे पदार्थ सुख प्रदान करते हैं। ''पापी'' पृथ्वी की आकर्षण शक्ति की तरह वापस उसी व्यक्ति पर गिरता है जो पाप करता है। ''अहंकार सब पापों का मूल कारण होता है।'' स्वयं की प्रशंसा करना घृणा उत्पन्न करता है, जबकि विनम्र एवं मर्यादित व्यक्ति श्रद्धा का पात्र होता है एवं सबका मित्र होता है। प्रभु, एक कीड़े को, जो कि प्रभु-प्रशंसा भी नहीं कर सकता, सहायता करता है-सुख देता है। जो आसुरी प्रकृति के लोग हैं, जो उस हितैषी परमात्मा में भी दोष देखते रहते हैं, उनको भी सुखमय जीवन दे देता है तो भक्तों को तो अपना आशीर्वाद दे ही देता है। वह स्वयं सत्य भक्ति को स्वीकार कर सबको यथार्थ आनन्द देता है। ''अज्ञानता एक परोपकारी व्यक्ति को भी घमण्ड़ी बना देती है।''

पापियों से भी अधिक पाप करने वाला व्यक्ति अगर ज्ञानरूप यज्ञ में श्रद्धा से समागत हो जावे तो वह नि:संदेह सम्पूर्ण पापों से अच्छी प्रकार तर जायेगा, क्योंकि ज्ञानरूपी अग्नि संपूर्ण पाप कर्मों को भस्ममय कर देती है। ज्ञान के द्वारा संशय खत्म होने से पाप नष्ट हो जाते हैं और वह व्यक्ति शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

''हे परमेश्वर! हे सुभग! तू हमारे मन को धर्मानुकूल करके कल्याणपूर्ण बना, जिससे हम अज्ञान के विनाश करने और पाप-पुण्य के संग्रामों में पाप को दबाने में समर्थ होवें। हमारे काम-क्रोधादि शत्रुओं की सेना को तो अवनत कर हम अपने मनोवांछित फल प्राप्ति के लिये तुझे भजते हैं।''

सामवेद, मन्त्र-१५६० एवं ऋग्वेद, मंडल-८, सूक्त-१६, मन्त्र-20।।

पाप करने वाले चोरों को, जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को पीड़ा व कष्ट पहुँचाते हैं, राजधर्म और प्रजामार्ग से दण्डित कर, शिक्षा देकर श्रेष्ठ स्वभावयुक्त करें। ''दूसरे के पदार्थ हरणरूप पाप से एवं अन्याय से दूसरे के पदार्थ को खाने वाले पाप से निरन्तर स्वयं की रक्षा करें। नीति और दण्ड के भय से सब मनुष्यों को पाप से हटा धार्मिक विद्वानों की सेवा करके, प्रजा में ज्ञान, सुख और अवस्था बढ़ाने के लिये सब प्राणियों को शुभगुणयुक्त सदा किया करें।''

-ऋग्वेद, मंडल-१, सूक्त-३६, मन्त्र-१४।।

यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरूष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने शरीर-पोषण के लिये ही पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं

-भगवद्गीता, अध्याय-३, श्लोक-१३।।

जिस मनुष्य ने अन्त:करण को जीतकर आसक्ति-रहित संपूर्ण भोग-सामग्री को त्याग दिया है, शरीर-सम्बन्धी कर्म करते हुए भी उसको पाप नहीं प्राप्त होता है। जो परिवार को महत्व देता है, अपने बच्चों को प्यार करता है, सामान्यत: वह पाप नहीं करता। पारिवारिक दायित्वों को महत्व न देने वाले व्यक्ति पाप-वासना में बह जाते हैं। अपने मन को अच्छे कर्म में लगाने वाला व्यक्ति, जैसे-ईश्वर की भक्ति, भजन, सत्संग आदि, पाप-कर्म नहीं करता। मुसलमान एवं ईसाईयों में तो पाप क्षमा होने का प्रवचन है-पाप किया-मसजिद या गिरजाघर में जाकर माफी मांग ली और मिल गई पाप से मुक्ति। हम हिन्दूओं में भी आजकल यह प्रवचन घर कर गया है-जैसे मंदिरों में दर्शन से, तीर्थ-स्थान पर जाकर, गुरू के द्वारा पूजा-पाठ से, गंगा-स्नान आदि से पाप क्षमा होने का प्रचलन। ईसाई सिद्धान्तों की तो सीधी घोषणा है-'We are born Sinners' हम जन्म से पैदाईशी पापी हैं। इसके विपरीत हमारे परमेश्वर हमें आत्मज्ञान देते हैं, कहते हैं यह शरीर नश्वर है-भस्मान्त है, आत्मा अमर है-अमृत है। आत्मा को सत्य में श्रद्धा स्वत: ही होने लगती है। स्वामी दयानन्द जी 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखते हैं कि ''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है।'' सब प्रकार के सुख के विस्तार के लिए, सब मनुष्यों को सत्य मार्गगामी बनना चाहिए। आत्मा का बल सबसे बड़ा बल है। शरीर बलवान् होना चाहिए। निर्बलता पाप है। आदर्श, अनुशासन, पारस्परिक स्नेह सामाजिक बल है। परमेश्वर का शासन प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप है। वास्तविकता में यदि पाप-कर्म किया है तो उस व्यक्ति को दण्ड अवश्य मिलेगा। 'इस जन्म में फल नहीं मिला तो मरकर कर्मों का फल अवश्य मिलेगा' मन में इस विचार को रखते हुए मनुष्य मन, वाणी और शरीर से सदा शुभ कार्य ही करे। जिन महात्मा एवं आप्त ऋषियों के मानसिक, वाचिक और कायिक कर्म संसार के दु:ख दूर करने के लिये होते हैं, उनके उपदेशों को सब मनुष्य सदा पुरुषार्थी होकर प्रीतिपूर्वक हृदय में ग्रहण करें या धारण करें तो कभी मानसिक पाप उदय ही न हो। मानसिक-पाप जब मन में उदय होता है और शरीर द्वारा कार्यान्वित होता है तब वह अपराध (गुनाह) हो जाता है। अपराध अदृश्य होता है और फैल जाता है और पाप दृष्टिगोचर हो जाता है। अपराधी दूसरे को यातना देता है, आतंक फैलाता है। अपराध अगर माता-पिता, पुत्र, आचार्य वा मित्र किसी ने भी किया हो तो उसे अपराध के अनुसार ताड़ना अवश्य देनी चाहिये। गुणी व्यक्ति के पास जाकर वह स्वयं को सुधार लेता है तो ठीक है, नहीं तो वह अपराधों को बार-बार दोहराता रहता है। दोहराने से वह अपराध या पाप हमसे दूर नहीं होता वरंच अन्त:करण में स्थान पाप लेता है।

''जो लोग पापमय जीवन व्यतीत करते हैं, परमात्मा उनकी वृद्धि कदापि नहीं करता। यद्यपि पापी पुरुष भी कहीं-कहीं फलते-फूलते हुए देखे जाते हैं, तथापि उनका परिणाम अच्छा कदापि नहीं होता। अन्त में जिस ओर धर्म होता है उसी पक्ष की जय होती है। इस तात्पर्य से मन्त्र में यह कथन किया है कि परमात्मा पापी पुरुष और उनका अनुमोदन करने वाले दोनों का नाश करता है।''

-ऋग्वेद, मंडल-६, सूक्त-२४, मन्त्र-७।।

आत्म-उत्थान के इच्छुक व्यक्ति को तामसी, राजसी लोगों की कभी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए, न ही उनके कार्यों का अनुकरण करना चाहिए, क्योंकि इनका सम्मान करने से पाप का बीज हृदय में अंकुरित हो जाता है और अनुकूल परिस्थिति के होते ही साधक का पतन करने में सहयोगी बन जाता है। ''पाखण्डियों अर्थात् वेद विरोधियों, अपराधियों अथवा शास्त्रोक्त निर्धारित कर्त्तव्यों के विरुद्ध चलने वाले विडाल वृत्ति वालों (छिपकर घात करने वालों) धूर्त, ठग, कुतर्की, बकवादी, बगुला-भक्त (ऊपर से शान्त-भीतर से घात लगाने वालों) छली-कपटी आदि मनुष्यों का वाणी मात्र से भी सत्कार नहीं करना चाहिए।''

-मनुस्मृति, अध्याय-४, श्लोक-३०।।

उपरोक्त दोषों से बचकर प्रभु का गुण-कीर्तन, उपासना से साधक देव बन जाते हैं। जीवन का चालू रहना एक सहारा है, परन्तु स्थायी सहारा तो परमेश्वर का ही होता है। प्रभु ने हमारे लिए कुछ नियम बनायें हैं। जैसे, वृक्षों को काटने आदि में हिंसा तथा हिंसाजन्य पाप नहीं होता। पाप न होने का दूसरा कारण यह भी है कि उनके फल आदि का भक्षण करना ईश्वरीय व्यवस्था है और

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(सम्पादकीय)

23 दिसम्बर को सभी आर्य समाजें स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाएं

23 दिसम्बर 2018 रविवार को गुरूकुल कांगड़ी के संस्थापक एवं आर्य समाज के लिये मनसा, वाचाः व कर्मणा समर्पित, अपना सर्वस्व आहूत करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस है। इस दिन एक मतान्ध मुस्लिम ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की गोली मारकर हत्या कर दी थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने महर्षि दयानन्द के आदर्शों को पूरा करने के लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। कवि इकबाल ने ठीक ही कहा है-

मिटा दे अपनी हस्ती को यदि कुछ मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तप और त्याग की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को नई दिशा दी थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी-अपनी आर्य समाजों में तथा शिक्षण संस्थाओं में 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस उत्साह के साथ मनाएं। उनके द्वारा किए गए कार्यों से लोगों को अवगत कराएं।

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज कर्मभूमि के अद्वितीय योद्धा थे जिन्होंने अपने अनुपम पुरूषार्थ एवं त्याग से आर्य समाज को एक नया रूप दिया। वकालत करते हुए उनकी गणना उस समय के प्रसिद्ध वकीलों में होती थी। वे झूठे मुकद्दमें की पैरवी नहीं करते थे। मुन्शीराम के ऊपर जब आर्य समाज का रंग चढ़ गया तो उन्होंने वकालत छोड़कर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अपने योगदान से देश भर में अग्रगण्य संस्थाओं में लाकर खड़ा कर दिया। उस समय उनके सामने ऐसे विद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव विचाराधीन था जिससे अंग्रेजी सत्ता के चंगुल से भारतीय विद्यार्थी बचाए जा सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की और अंग्रेजी राज्यकाल में यह प्रथम विद्यालय था जिसमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखा गया। लार्ड मैकाले ने जिस उद्देश्य की पूर्ति के तहत अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा हमारी संस्कृति, सभ्यता को तहस-नहस करने का प्रयास किया था उसके बदले में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना करके एक नई क्रान्ति का सूत्रपात किया। इसी गुरूकुल कांगडी से अनेकों, विद्वान्, देशभक्त बलिदानी तैयार हुए। कल्याण मार्ग के पथिक महात्मा मुन्शीराम ने सर्वात्मना त्याग भावना से प्रेरित होकर अपनी जालन्धर वाली कोठी व सब सम्पत्ति आर्य समाज को दान कर दी। परमात्मा में उनकी असीम श्रद्धा थी इसलिए उन्होंने सन्यास के पश्चात अपना नाम श्रद्धानन्द रखवाया।

गुरूकुल कांगड़ी का प्रबन्ध आचार्य रामदेव को सौंप कर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज दिल्ली में पधारे और यहां से उनकी राजनैतिक और धार्मिक गतिविधियों का प्रारम्भ हुआ। सन् 1922 में जब सिक्खों ने गुरू के बाग का सत्याग्रह प्रारम्भ किया और अंग्रेजी सरकार उस आन्दोलन को दबाने की तैयारी करने लगी तो इस समाचार को सुनकर स्वामी श्रद्धानन्द जी तुरन्त अमृतसर पहुंच गए और सत्याग्रह का संचालन उन्होंने स्वयं अपने हाथ में लिया। वीर सन्यासी ने गुरू का बाग सत्याग्रह के प्रथम जत्थे के प्रथम सत्याग्रही के रूप में अपने को प्रस्तुत किया और वे अंग्रेजी सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में स्वामी जी ने सक्रियँ भाग लिया और उस समय के देश के अग्रिम नेताओं में दिखाईं दिए। अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुई क्रूर घटना को देखकर पंजाब की भूमि प्रकम्पित हो उठी। ऐसी स्थिति में कांग्रेस का नाम लेने वाला भी पंजाब में दिखाई नहीं देता था। तब स्वामी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में बुलाने का प्रस्ताव किया और स्वयं उनके स्वागताध्यक्ष बनें। कांग्रेस के इतिहास में सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना भाषण हिन्दी में पढ़ा। 1919 में जब दिल्ली में कांग्रेस की सभाएं और जलूस बन्द करने का आदेश दिया गया तो उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा जलूस निकाला गया। चांदनी चौक पर जलूस को रोककर चेतावनी दी गई कि पीछे हट जाओ नहीं तो गोली चला दी जाएगी। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गोरों की संगीनों के सामने अपना सीना तानकर कहा कि हिम्मत है तो पहले गोली मुझ पर चलाओ बाद में सत्याग्रहियों पर चलाना। स्वामी जी की निर्भीकता को देखकर जवानों को संगीने हटा लेने का आदेश दिया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। इसलिए मुसलमानों ने जामा मस्जिद के मैम्बर पर खड़े होकर उपदेश करने की प्रार्थना की। इस्लाम के इतिहास में यह पहली घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम को इस प्रकार का सम्मान दिया गया हो। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पवित्र वेद मन्त्र **त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधाते सुम्नमीमहे।।** के उच्चारण द्वारा जामा मस्जिद के मैम्बर से हिन्दुओं और मुसलमानों को सम्बोधित किया था। परन्तु कांग्रेस के मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और खुले रूप से भारतीयकरण का कार्य अपने हाथ में लिया। सर्वप्रथम उन्होंने आगरा के मलकाने राजपूतों को स्वधर्म में वापस लेकर इस महान् आन्दोलन का सूत्रपात किया। स्वामी श्रद्धानन्द के इस कार्य से कुछ साम्प्रदायिक लोग उनसे नाराज हो गए और 23 दिसम्बर 1926 को एक मतान्ध साम्प्रदायिक अब्दुल रसीद ने गोली मारकर हत्या कर दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जीवन पर्यन्त देश, धर्म और जाति के लिए सर्वस्व बलिदान किया और अन्तिम क्षणों में अपना भौतिक शरीर भी राष्ट्र को अर्पण कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा किए गए मानवता के तथा राष्ट्रहित के कार्यों को हमेशा याद किया जाएगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान राष्ट्रहित के लिए था। इसीलिए इस दिन को बहुत ही उत्साह के साथ मनाना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणादायक है। राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व त्याग करने वाले इस संसार में बहुत विरले होते हैं। किस प्रकार निराशा भरे जीवन से उठकर एक साधारण मानव महामानव बन सकता है? इसकी उज्जवल प्रेरणा हमें स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से मिलती है। इसीलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें एवं शिक्षण संस्थाएं 23 दिसम्बर 2018 रविवार को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस धूमधाम से मनाएं। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा किए गए कार्यों को आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

२. पीपल की राख १० ग्राम २० ग्राम बकरी के दूध के साथ सेवन करें।

टयूमर-(गुल्म) पके केले के भीतर ४ बूँद पपीते का दूध भर कर खिलाने से टयूमर ठीक हो जाता है। १५ दिन प्रयोग करें।

डब्बा-(पसली चलना) अमलतास की फली को जला कर भस्म करके बारीक पीस कर शीशी में भर लें। बच्चे की पसली चलने के समय जरा सी चटा दें। बच्चा निरोग हो जायेगा।

डिप्थीरिया-पपीते के फल से निकलने वाला रस १५ बूँद शहद १५ बूँद दोनों को मिलाकर दिन में ३-४ बार पिलायें। चमत्कारिक लाभ करती है।

२. लहसुन की कली छीलकर दूध में पका कर बच्चे को खिलायें विकार आ गया है वह इस कुकर्म से बचें। रात्रि में ३ ग्राम हींग को पानी में पीसकर मूत्रेन्द्रिय पर लेप करें। प्रातः गर्म पानी से धो डालें। २ रोज प्रयोग करें। आश्चर्य जनक लाभ होगा। हानि रहित दवा है।

तिल्ली-१. सत्यानाशी कटेरी की जड़ का रस १० ग्राम शहद १० ग्राम दोनों को मिलाकर पिलायें।

२. ओंघा की जड़ का चूर्ण छाछ के साथ लें।

३. मूली प्रातः सैंधा नमक के साथ खायें।

४. झोझरू का चूर्ण गाय की छाछ से लें।

तिजारी-इतवार के दिन ओंघा के रस में गुड़ मिलाकर गोली बनाकर रख लें।

२. गोली सुबह ही जल के साथ सेवन करें। दिन में तीन बार लें।

विषम ज्वर-(मलेरिया) १. हर श्रंगार के पत्तों का रस शहद में मिलाकर पियें।

२. तुलसी के पत्ते, काली मिर्च, अदरक तीनों को मिलाकर शहद के साथ चाटें। दिन में ३ वार

प्यास अधिक लगना-(तृषा) शहद २० ग्राम लेकर १० मिनट मुँह में रखकर कुल्ला कर दें।

तुतलाना-१. ब्राह्मी के पत्ते २१ काली मिर्च ५ दाने दोनों को पीसकर नित्य पिलायें। १ माह में लाभ होगा।

२. छोटी हल्दी को पीसकर २ ग्राम पान के पत्ते में रखकर चूसने से तुतला पन जाता रहता है।

३. सत्यानाशी का दूध बच्चे की जीभ पर लगाया करें।

दन्तशूल-१. नौसादर और सोंठ पीस कर दांतों पर मलें।

२. नीला थोथा लेकर फूला करके रख लें पीस कर ठन्डे पानी से कुल्ला करें।

३. दूध में घी मिलाकर पिलाने से दर्द दूर होता है।

४. फिटकारी तथा लोंग समभाग पीस कर दांतों पर मलें।

दाढ़ दर्द-१. अपामार्ग का रस जिधर की दाढ़ में दर्द हो उससे विपरीत वाले कान में डालें।

६. आम की टहनी सुखाकर कोयला बना लें। उसे बारीक पीस कर सरसों के तेल में मिलाकर दांतों पर मालिश करें।

दांतों का हिलना-१. हल्दी जलाकर कोयला करलें उसमें समभाग अजवायन मिला लें पीसकर मंजन करें। दांतों का हिलना बन्द हो जायेगा।

२. बबूल की कली जब पक जाय उनके बीज छाया में सुखाकर मंजन बना लें अतिलाभ प्रद है।

३. माजूफल पीसकर मंजन करें।

दन्त रोग-१. लोंग १० ग्राम, कूपर १ ग्राम दोनों को पीसकर दांतों पर मलें।

२. मौलसिरी की दांतौन करें।

३. दांतों पर बरगद के दूध की फुरैरी लगायें दुर्गन्ध दूर होगी।

४. ओंघा की दातुन अति लाभप्रद हैं।

दन्त मंजन-तुलसी के पत्ते सूखे हुये २० ग्राम, अजवायन २० ग्राम, सैधा नमक १० ग्राम तीनों को बारीक पीसकर मिला लें। प्रातः सांय गर्म जल से मंजन करें। दर्द गुर्दा, नजला, जुकाम, खांसी के लिए रामवाण है। अखरोट की छाल मिला लें तो बहुत ही लाभप्रद है।

दांत के कीड़े-द्रोण पुष्पी (गोमा) के पत्तों का रस, समुद्र फेन शहद तथा तेल चारों सम भाग लें। बारीक पीस तेल में मिला लें २ बूंद कान में टपकाने से दाढ़ दांत के कीड़े मर जाते हैं।

दमा-१. बताशे में २ बूंद आम के दूध की डालकर सूर्योदय से पहले निगलें।

२. छोटी दुधी का रस १० ग्राम गाय का गर्म दूध ठण्डा करके मिलाकर पिलायें। मीठा नहीं डालें। सुबह शाम दोनों समय पिलायें।

३. आक के फूल की लोंग काली मिर्च और काला नमक तीनों समभाग मिलाकर मटर जैसी गोली बनाकर रख लें गर्म जल के साथ लें।

४. वासा का चूर्ण ३ ग्राम जल के साथ सेवन करें।

दस्त-१. छोटी दुधी दही या छाछ में पीस कर लें। मात्रा १० ग्राम दहीं ५० ग्राम।

२. गूलर के पत्ते १० ग्राम लेकर पानी में घोंटकर पिलायें।

दाद-१. नीम के पत्ते पीसकर दही में मिलाकर लगायें।

२. हल्दी बारीक पीसकर पानी में मिलाकर लेप करें।

३. आक के फूल की लोंग काली मिर्च और काला नमक तीनों समभाग मिलाकर मटर जैसी गोली बनाकर रख लें गर्म जल के साथ लें।

४. वासा का चूर्ण ३ ग्राम जल के साथ सेवन करें।

दस्त-१. छोटी दुधी दही या छाछ में पीस कर लें। मात्रा १० ग्राम दहीं ५० ग्राम।

२. गूलर के पत्ते १० ग्राम लेकर पानी में घोंटकर पिलायें।

दाद-१. नीम के पत्ते पीसकर दही में मिलाकर लगायें।

२. हल्दी बारीक पीसकर पानी में मिलाकर लेप करें।

३. तुलसी के पत्ते दाद वाले स्थान पर मले।

४. आक का दूध लगायें।

५. पवार के बीज पीसकर चूर्ण कर करंज के तेल में मिलाकर लगायें।

दमा बच्चों का-अमलताश का गूदा १५ ग्राम पानी में उबाल कर पिलायें।

दुबलापन-१. असगन्ध का चूर्ण ५०० ग्राम शीशी में रख लें मात्रा १० शहद के साथ गाय के दूध से सेवन करें अनुभूत है।

२. शतावर का चूर्ण १ किलो खोये में ५० ग्राम मिलाकर गाय के दूध के साथ लें। अद्‌भूत शक्ति दायक है।

दिमाग की निर्बलता-१. ब्राह्मी रस ५ ग्राम शहद समभाग ठंडाई मिलाकर पियें।

२. शंख पुष्पी का रस २ काली मिर्च थोड़ी सी थोड़ी सी चीनी बनाकर पियें।

३. छोटी इलायची के बीज १० ग्राम वश लोचन असली १ ग्राम दोनों को मिलाकर मक्खन के साथ चाटें। १ माह सेवन करें।

दिल के रोग हृदय रोग-१. अर्जुन की छाल का बारीक चूर्ण ५० ग्राम गाय के दूध के साथ लें। दूध में २० ग्राम मिश्री डालकर निराहार लें।

२. पीपल के कोमल पत्तों का रस ५ ग्राम शहद मिलाकर पियें।

३. चना भिगोकर छिलका समेत खायें।

दूध की कमी-१. शतावर का चूर्ण ५ ग्राम चीनी १० ग्राम गाय के दूध से लें। इससे स्त्रियों का दूध बढ़ता है-

दाद खाज-अपामार्ग (ओंघा) के बीजों को गौ मूत्र में तीन दिन भिगोयें। फिर चौथे दिन निकाल कर बीजों को छाया में सुखाकर पीस लें। घी में मिलाकर मल्हम बनाकर प्रयोग करें।

त्वचा रोग-अमल तास का पंचाग फूल, पत्ते, छाल, बीज, जड़ सबको बराबर लेकर पानी में पीस कर लेप करें। इससे दाद, खुजली त्वचा रोग दूर होते हैं।

दाद-आक के पत्ते पंवार के बीज दही में पीस कर लेप करें।

धातु क्षीणता के लिये-शंख पुष्पी (शंका हूली) ५ ग्राम इलायची २ नग काली मिर्च ३ घौंटकर मिश्री मिलाकर पियें। प्रातः सांय।

दमा-करील की लकड़ी की भस्म १ ग्राम पान के साथ सेवन करें।

दीर्घ आयु-आंवला, हर्र, असगन्ध तीनों सम भाग १००-१०० ग्राम ४०० मिश्री पिलाकर चूर्ण करके शीशी में रख लें ५ ग्राम सुबह शाम दूध से सेवन करें।

दमा-१. अपापार्ग (चिरचिटा लम्बी बाल वाला) पूर्णिमा के दिन ४ बजे प्रातः पेड़ उखाड़ कर लायें। छाया में सुखाकर उसकी भस्म बनायें। उसको पानी में घोलकर कढ़ाही में गर्म करें। जब गाढ़ा हो जाय गोली बना लें। १ गोली मटर के बराबर दिन में तीन बार लें। घी का सेवन करें।

२. सोंठ अडूसा नागर मोथा, भारंगी, चिरायता, नीम की छाल ५-५ ग्राम कूट पीस कर काढ़ा बनायें। शहद के साथ सेवन करें। दिन में तीन बार सुबह, दोपहर शाम।

३. कपूर १ ग्राम छोड़ा सा गुड़ मिलाकर गोली बना लें मटर जैसी दूध के साथ सुबह शाम प्रयोग करें।

(क्रमशः)

गर्भाधान संस्कार

ले.-डा. सुशील वर्मा गली मास्टर मूलचन्द वर्मा, फाजिलका

वैदिक संस्कृति में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। संस्कार का अर्थ है शुद्ध करना। जिस प्रकार सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि में तपाकर शुद्ध करता है उसी प्रकार नवजात शिशु को संस्कारों की भट्टी में, उसके दुर्गुण निकाल कर सद्‌गुणों का प्रतिपादन करने के प्रयत्न को 'संस्कार' कहा जाता है। चरक ऋषि के अनुसार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को दूर कर सद्‌गुणों का आधान ही संस्कार है।

''संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते''-चरक। ऋषि यह प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। वास्तव में यह मानव के नवनिर्वाण की योजना है। यह सत्य है कि शिशु जन्म जन्मान्तर के एवं माता पिता के संस्कारों को साथ लेकर इस संसार में प्रवेश करता है। जिस प्रकार वृक्ष बीज में समाहित है, वृक्ष बीज का ही फैलाव है उसी प्रकार कर्म-अनन्त कर्म बीज रूप में संस्कार में समा जाते है सूक्ष्म-शरीर इन सस्कारों का वहन करता है। मृत्यु तो स्थूल शरीर की होती है, सूक्ष्म शरीर तो आत्मा के साथ बना रहता है। ज्ञातव्य है कि यजुर्वेद के 34/3 मन्त्र में कहा गया है ''यज्ज्योतिरन्तमृतं प्रजासु'' अर्थात् प्रजाओं के भीतर एक अमर ज्योति है।

''यत् प्रज्ञानमुत चेतो... शिव संकल्पमस्तु'' (यजु 34/3)

इसी का अनुमोदन छान्दोग-योपनिषद् में श्वेतकेतु-उद्दालक संवाद में जीव को अमर ज्योति बताया गया है। यह सूक्ष्म तत्त्व ही आत्मा है 'स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो' (छान्दरोयो 6/8/7) यह सूक्ष्म शरीर ही अच्छे बुरे संस्कार ले कर चलता है। वैदिक मान्यता है कि मानव जन्म लेने से पूर्व (गर्भ अवस्था में) माता पिता के शुद्ध संस्कारों के कारण पुराने संस्कारों के होते हुए भी (थोड़े बहुत अशुद्ध विचार) नई दिशा प्राप्त कर पाएगा। बच्चे का जन्म होने से पहले हम जो चाहे बना सकते है-इसका उपाय माता-पिता के निजी संस्कारों का सबल बनाना। दूसरा बालक को ऐसे वातावरण से आच्छादित कर देना ताकि उसका सब विकास हो सके और इसके लिए संस्कारों की रचना की गई। संस्कारों से मनुष्य जन्म-जन्मान्तरों के संचित संस्कारों को बदल सकता है। माता-पिता के संस्कार (Heredity) और सामाजिक पर्यावरण (Social Environment) दोनों ही उसके जीवन के आधार बन पाएगें इसीलिए हमारी संस्कृति में संस्कारों का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है। वैदिक परम्परा का अनुसरण करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ''संस्कार विधि'' की रचना की जिसका उद्देश्य नव-मानव के निर्माण की योजना को प्रस्तुत करना था। इस ग्रन्थ में नव निर्माण हेतु 'सोलह संस्कारों' का विधिवत वर्णन है। संस्कार आत्मा के जन्म धारण करने से पहले शुरू हो जाते है, कुछ जन्म ग्रहण के बाद। जन्म ग्रहण से पहले संस्कारों में पहला संस्कार है। ''गर्भाधान संस्कार''। इस संस्कार पर हम चर्चा करते है।

गर्भाधान संस्कार: प्राय: धारणा यही है कि जो कुछ है वह ''वंशानुसंक्रमण'' है अर्थात् (Heredity)। इस सम्बन्ध में संस्कार प्रणाली एक नया दृष्टिकोण उपस्थित करती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि माता पिता द्वारा आए संस्कार प्रबल है परन्तु यह भी सत्य है कि नवीन संस्कारों से पुराने संस्कारों को शुद्ध किया जा सकता है, बदला जा सकता है।

''गर्भाधान संस्कार को एक पवित्र संस्कार का रूप वैदिक विचारधारा में प्रस्तुत किया गया है। बृहदारण्यकोपनिषद् में गर्भाधान संस्कार का वर्णन है। मैक्समूलर ने जब इस उपनिषद् का भाष्य किया तब इसे अश्लील कहकर अंग्रेजी में अनुवाद करने की बजाए लैटिन में भाष्य किया। वह यह समझ ही नहीं पाया कि जिन ऋषि मुनियों ने नए प्राणी के आह्वान को एक पवित्र संस्कार का रूप दिया था, उनके लिए यह नव-मानव के निर्माण की योजना थी। इस संस्कार को उन्होंने उपनिषद् जैसे आध्यात्मिक ग्रन्थ में स्थान दिया तो इसका विशेष प्रयोजन होगा। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में इस संस्कार को उत्सव के रूप में मनाया जाता है। प्राय: धारणा यही रहती है कि गर्भाधान एक 'घृणित-कृत्य' है। जहाँ पाश्चात्य संस्कृति में विवाह को केवलमात्र (Sex) का साधन समझा जाता है वहीं हमारे यह धार्मिक संस्कार है। कारण यही है कि समाज के नव निर्माण के लिए सन्तति आवश्यक है और हम समाज को जैसा चाहे बना सकते हैं। अच्छे वृक्ष के लिए अच्छे बीज, खाद, वातावरण की आवश्यकता है उसी प्रकार बलिष्ठ शरीर तथा उच्च आत्माओं के आवाहन के लिए संस्कारित बालक होना आवश्यक है।

इस संस्कार में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक यही प्रतीत होता है कि हम धार्मिक एवं पवित्र कार्य कर रहे हैं। पति-पत्नी यज्ञ करने के लिए बड़े बजुर्गों को निमन्त्रित करते है। किसी काम क्रीडा में रत न होकर पवित्र-यज्ञ करने जा रहे है क्योंकि इसका परिणाम केवल मात्र पति-पत्नी के लिए ही नहीं अपितु सारे समाज, सारे देश, सारे राष्ट्र के लिए होने वाला है। यह एक सामाजिक प्रक्रिया है उस परिवर्तन के लिए जिस द्वारा हम समाज, राष्ट्र को उत्कृष्ठ पथ पर ले जाना चाहते है।

गर्भाधान के लिए शरीर तथा मन की अवस्था उच्च स्तर की होनी आवश्यक है। चरक ऋषि के अनुसार जो स्त्री चाहे कि उसका पुत्र निर्मल चरित्र का, प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी हो वह प्रात: सायं निरन्तर अच्छी नस्ल के श्वेत अश्व का दर्शन करे।

''सायं प्रातश्च शश्वत्, श्वेतं महान्तं वृषभभाजनेय वा हरिचन्द्रनाङ्गरं पश्येत''

सन्तान माता-पिता के अंग अंग का निचोड़ होती है। वह उन्हीं की आत्मा का स्वरूप है।

''अङ्गादङ्गात्संभवसि हृदयाद-धिजायसे, आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरद: शतम्'' निरुप्त 3/4

गर्भाधान के समय स्त्री जैसी सन्तान चाहे वैसी ही विचारशील, तन्मय हो जाए। ''तन्मना बीजं गृह्णीयात्'' अर्थात् तन्मय हो कर बीज ग्रहण करे। जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तब माँ की मनोवृति का सन्तान पर पूरा प्रभाव पड़ता है। इतिहास इस का प्रमाण है। महाभारत में जब अभिमन्यु सुभद्रा के पेट में था तो अर्जुन ने चक्रव्यूह के भेदन की कथा तो कह दी परन्तु व्यूह से बाहर आने के विषय में न बता पाया और परिणाम नहीं हुआ। इसी संदर्भ में मदालसा रानी गर्भावस्था में गाया करती थी ''शुद्धोसि, बुद्धोसि, निरंजनोसि संसारमायापरिव-र्जितोसि''

अर्थात् ऐ मेरे बेटे ''तूँ शुद्ध है, बुद्ध है, संसार की माया से निर्लिप्त है'' परिणाम यह हुआ कि आठों पुत्र तो ब्रह्मर्षि बन गए। परन्तु जब उसके पति ने कहा ''कि इस प्रकार वंश कैसे चलेगा, राजपाठ कौन सम्भालेगा तब नवें पुत्र के उत्पन्न होने के समय संस्कारों की परिस्थितियों को बदल दिया गया। ऐसा ही नैपोलियन के विषय में कहा जाता है कि उसकी माता सैनिकों की परेड़ देखा करती थी, सैनिकों को गीत गाते बड़ी प्रफुल्लित होकर सुनती थी। परिणाम नैपोलियन एक महान योद्धा बना। यह भी कहा जाता है कि बिस्मार्क के फ्रांस से प्रतिषोध केवल उसकी माता के संस्कारों से प्रभावित था। इस प्रकार यह गर्भाधान संस्कार एक उच्चस्तरीय नव निर्माण की योजना का सबसे प्रभावशाली कदम है। तो फिर क्यों न इसे सामाजिक उत्सव के रूप में मनाए ताकि हमारी संस्कारित सन्तति समाज एवं राष्ट्र के उन्नत करने में सहायक हो।

संस्कार विधि के अनुसार सामान्य यज्ञ पद्धति की आधारा-वाज्यभागाहुतियों (ओ३म् अग्नये स्वाहा से ओ३म् इन्द्राय स्वाहा) के पश्चात् 20 आहुतियाँ दी जाती है जिसका तात्पर्य है कि-

पहले पाँच मन्त्रों में अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य तथा इन सबको एक साथ सम्बोधित करके इन देवताओं से प्रार्थना की गई है कि हमारे पास (पति-पत्नी) धर्मानुकूल प्राप्त लक्ष्मी (धन दौलत) रहे अधर्मानुकूल पापी लक्ष्मी सम्पदा न रहे।

आगे के पाँच मन्त्रों में प्रार्थना की गई है

1. पापी लक्ष्मी तनू: अर्थात् पापी धन दौलत न रहे।

2. पतिहनी तनू: अर्थात् पत्नी विधवा न हो।

3. अपुत्र्या तनू:-स्त्री सन्तानहीन न हो।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

यज्ञ क्यों करें ?

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

यजुर्वेद कर्म काण्ड का वेद हैं। विविध यज्ञों में इसी वेद के मंत्रों से आहूति दी जाती है। प्रथम अध्याय मंत्र 2 में ही यज्ञ की चर्चा है।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वानो घर्मोऽसि विश्वधाऽसि परमेण धाम्ना-दृꣳहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपति र्ह्वाषीत्। यजु 1.2.

स्वामी दयानन्द इसके भावार्थ में लिखते हैं, 'मनुष्य लोग अपनी विद्या और उत्तम क्रिया से जिस यज्ञ का सेवन करते हैं, उससे पवित्रता का प्रकाश, पृथ्वी का राज्य, वायुरूपी प्राण के तुल्य राजनीति, प्रताप, सबकी रक्षा, इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि, परस्पर कोमलता से वर्तना और कुटिलता का त्याग इत्यादि श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं इसलिए सब मनुष्यों को परोपकार तथा अपने सुख के लिए विद्या और पुरूषार्थ के साथ प्रीतिपूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।'

इस एक मंत्र के भावार्थ में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ से होने वाले कितने ही लाभों के विषय में बता दिया हैं।

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारम्।

देवस्त्वासविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वाकामधुक्षः। यजुर्वेद 1.3.

पदार्थ-जो (वसोः) यज्ञ (शतधारम्) असंख्यात संसार का धारण करने और (पवित्रम्) शुद्धि करने वाला कर्म (असि) है। जो (वसोः) यज्ञ (सहस्त्राधारम्) अनेक प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करे और (पवित्रम्) शुद्धि का निमित्त सुख देने वाला (असि) है। (त्वा) उस यज्ञ को (देवः) स्वयं प्रकाश स्वरूप (सविता) वसु आदि तैंतीस देवों का उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर (पुनातु) पवित्र करे। हे जगदीश्वर। आप हम लोगों से सेवित जो (वसो) यज्ञ है (पवित्रेण) शुद्धि के निमित्त वेद के विज्ञान (शतधारेण) बहुत विद्याओं का धारण करने वाले वेद और (सुप्वा) अच्छी प्रकार पवित्र करने वाले यज्ञ से हम लोगों को पवित्र कीजिये। हे विद्वान् पुरूष। तू (काम) वेद की श्रेष्ठ वाणियों में से किस किस वाणी के अभिप्राय को (अधुक्षः) अपने मन में पूर्ण करना चाहता हैं।

फिर यज्ञ से होने वाले लाभ पर मंत्र संख्या 12 में कहा गया है-

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः।

देवीरापोऽअग्रेगुवोऽअग्रे-पुवोऽग्रऽइममद्ययज्ञं नयताग्रे नयताग्रे यज्ञपतिꣳसुधातुं यज्ञपति देवयुम्। यजु. 1.12

भावार्थ-इस मंत्र में लुप्तोप-मालंकार है। जो पदार्थ संयोग से विकार को प्राप्त होते हैं वे अग्नि के निमित्त से अति सूक्ष्म परमाणु रूप होकर वायु के बीच रहा करते हैं और कुछ शुद्ध भी हो जाते हैं परन्तु जैसी यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और सृष्टि जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती इससे विद्वानों को चाहिए कि वे अच्छी-अच्छी सवारी बना कर अनेक प्रकार से लाभ उठावें।

फिर पन्द्रहवें मंत्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं, 'जब मनुष्य वेदादि शास्त्रों द्वारा यज्ञ क्रिया और उसका फल जान कर शुद्धि और उत्तमता के साथ यज्ञ को करते हैं तब वह सुगन्धि आदि पदार्थो के होम द्वारा परमाणु अर्थात् अति सूक्ष्म होकर वायु और वृष्टि जल में विस्तृत हुआ सब पदार्थों से उत्तम करके दिव्य सुखों को उत्पन्न करता है। जो मनुष्य सब प्राणियों के सुख के अर्थ पूर्वोक्त तीन प्रकार के यज्ञ को नित्य करता है उसको सब मनुष्य यज्ञ का विस्तार करने वाला उत्तम मनुष्य है ऐसा बारम्बार कहकर सम्मान करें।

यजुर्वेद अध्याय दो मंत्र संख्या दो में कहा गया है-हे मनुष्यों। तुमको वेद आदि यज्ञ के साधनों का सम्पादन करके सब प्राणियों के सुख तथा परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए अच्छी प्रकार क्रिया युक्त यज्ञ करना और सदा सत्य ही बोलना चाहिए। तुम लोगों को भी मेरे (ईश्वर के) समान पक्षपात छोड़कर सब प्राणियों के पालन से सुख सम्पादन करना चाहिए।

यजुर्वेद अध्याय दो मंत्र संख्या सोलह में यह बताया गया है कि यज्ञ की क्रिया का वायु मण्डल पर क्या प्रभाव होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती इस मंत्र की भूमिका में लिखते हैं-इस मंत्र में लुप्तो-पमालङ्कार है। मनुष्य लोग यज्ञ में जो आहुति देते हैं वह वायु के साथ मेघ मण्डल में जाकर सूर्य से खिंचे हुए जल को शुद्ध करती है फिर वहाँ से वह जल पृथ्वी पर आकर ओषधियों को पुष्ट करता है। वह उक्त आहुति वेद मन्त्रों से ही करनी चाहिए क्योंकि उसके फल को जानने से श्रद्धा उत्पन्न होवे।'

कस्त्वा विमुञ्चति सत्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति।

पोषाय रक्षसा भागोसि। यजु. 2.23.

पदार्थ-(कः) कौन सुख चाहने वाला यज्ञ का अनुष्ठाता पुरूष (त्वा) उस यज्ञ को (विमुञ्चति) छोड़ता है अर्थात् कोई नहीं। और जो कोई यज्ञ को छोड़ता है (त्वा) उसको (सः) यज्ञ का पालन करने वाला परमेश्वर भी (विमुञ्चति) छोड़ देता है। जो यज्ञ को करने वाला मनुष्य पदार्थ समूह को यज्ञ में छोड़ता है (त्वा) उसको (कस्मै) किस प्रयोजन के लिए अग्नि के बीच में (विमुञ्चति) छोड़ता है (तस्मै) जिससे सबको सुख प्राप्त हो तथा (पोषाय) पुष्टि आदि गुण के लिए (त्वा) उस पदार्थ समूह को (विमुञ्चति) छोड़ता है। जो पदार्थ सब के उपकार के लिए यज्ञ के बीच में नहीं मुक्त किया जाता वह (रक्षसाम्) दुष्ट प्राणियों का (भागः) अंश (असि) होता है।

यजुर्वेद अध्याय तीन मन्त्र पहला के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं। जैसे गृहस्थ मनुष्य आसन, अन्न, जल, वस्त्र और प्रियवचन आदि से उत्तम गुण वाले सन्यासी आदि को सेवन करते हैं वैसे ही विद्वान लोगों को यज्ञ, वेदी, कला यंत्र और यानों में स्थापन कर यथा योग्य इन्धन, घी, जलादि से अग्नि को प्रज्वलित करके वायु, वर्षा जल की वृद्धि अथवा यानों की रचना नित्य करनी चाहिए।

स्वामी जी चाहते हैं कि मनुष्य विमानादि बनाना भी सीखें। यज्ञ का बड़ा लाभ वृष्टि का ठीक से होना भी है इसे यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या बारह में बताया गया है।

द्यौरसीत्पूर्व चित्तिरश्वऽआसीद् बृहद्यः।

अदिरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिणा।

भावार्थ-हवन और सूर्य रूपादि अग्नि के ताप से सब गुणों से युक्त अन्नादि से संसार की स्थिति करने वाली वर्षा होती है। उस वर्षा से सब ओषधि आदि उत्तम पदार्थ युक्त पृथ्वी होती और सूर्य रूप अग्नि से ही प्राणियों के विश्राम के लिए रात्रि होती है।

यज्ञ में पशु की बलि देने की प्रक्रिया का यजुर्वेद समर्थन नहीं करता है। यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या 17 में इस विषय में नाना प्रकार से इस विषय पर कहा गया है-

अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त-सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्नग्निः

स ते लोको भविष्यत्ति तं जेष्यसि पिबैताऽ अपः।

पदार्थ-हे विद्या बोध चाहने वाले पुरूष (अस्मिन्) जिस देखने योग्य लोक में (सः) वह (अग्निः) अग्नि (पशुः) देखने योग्य (आसीत्) है (तेन) उस से जिस प्रकार यज्ञ करने वाले (अयजन्त) यज्ञ करें उस प्रकार से तू यज्ञ कर जैसे (सः) वह विद्वान् (एतम्) इस (लोकम्) देखने योग्य स्थान को (अजयत्) जीतता है वैसे इसको जीत यदि (तत्) उसको (जैष्यसि) जीतेगा तो वह (अग्निः) अग्नि (ते) तेरा (लोकः) देखने योग्य (भविष्यसि) होगा इससे तू (एता) इस यज्ञ से शुद्ध किये हुए (अपः) जलों को (पिब) पी। इस मंत्र में अग्नि को ही पशु कहा गया है। वैसे ही यज्ञ को हिंसा रहित कहा जाता है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

23 दिसम्बर 2018 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में प्रातः 10:30 से 1:30 बजे तक आर्य सी. सै. स्कूल समीप पुरानी सब्जी मण्डी में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी विशेष अतिथि होंगे। आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् आचार्य रामानन्द जी का प्रवचन होगा तथा पं. राजेन्द्र व्रत के सुमधुर भजन होंगे। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर धर्म लाभ उठाएं।

विजय सरीन महामन्त्री जिला आर्य सभा लुधियाना

आर्य समाज मंदिर बस्ती दानिशमंदा का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मंदिर बस्ती दानिशमंदा, लसूड़ी मुहल्ला जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2018 तक बड़ी श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री विजय कुमार शास्त्री के प्रवचन तथा श्री सुरेन्द्र आर्य के मधुर भजन होंगे। 16 दिसम्बर से 22 दिसम्बर तक प्रातः 6.00 बजे प्रतिदिन प्रभात फेरियों का आयोजन किया जाएगा। प्रतिदिन सायंकाल 7.30 से 9.30 बजे बजे तक भजन व प्रवचन होंगे। 22 दिसम्बर 2018 को दोपहर 2.00 बजे आर्य समाज के प्रांगण से शोभा यात्रा का आयोजन भी किया जायेगा। आप सभी धर्मप्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस वार्षिक उत्सव में अपने इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें। **यशपाल आर्य प्रधान आर्य समाज**

पृष्ठ 2 का शेष-पापों से बचें

ईश्वरीय व्यवस्था तथा नियमों के पालन में कभी पाप नहीं होता बल्कि हम ज्यादा आनन्द में रहते हैं।

वेदों की नियम-व्यवस्था एवं प्रभु का अनुकरण करना ही दुःखों का हटाना एवं सुख पाना है। जो पाप विश्वासघात से, घृणा से, अपवाद से, असत्य व्यवहार से हम कर बैठते हैं और जो पाप हम सोते हुए वा जागते हुए करते हैं, न्यायकारी परमेश्वर, संपूर्ण ऐश्वर्य वाला जगदीश्वर, ज्ञानियों का हितकारी, बड़ी बुद्धि वाला, परमात्मा उस पाप से होने वाली दुर्गति से हमें बचावे एवं हमें ऐसे दुष्कर्मों से दूर रखे। ''किसी मनुष्य को कुटिलगामी सर्प आदि दुष्ट जीवों के समान धर्म मार्ग में कुटिल न होना चाहिए, किन्तु सदा सर्वदा सरल भाव से ही रहना चाहिए।''

-यजुर्वेद, अध्याय-६, मन्त्र-१२।।

पाप से घृणा करने वाला ही धर्म की तरफ आकृष्ट होता है, पाप को अच्छा मानने वाला कभी धर्मी नहीं बन सकता। धार्मिक मनुष्य ही परमात्मा के कृपापात्र होकर सदा विजय को प्राप्त करते हैं, दुष्ट नहीं। परमात्मा भी धार्मिक मनुष्यों को ही आशीर्वाद देता है, पापियों को नहीं। परलोक अर्थात् पर जन्म के सुखार्थ धर्म का संचय करें, क्योंकि परलोक में सिर्फ धर्म एवं सत्य ही सहायक होता है, जिसका धर्म-सत्य से, कर्त्तव्य-पालन से, पाप दूर हो गया हो, उसको प्रकाशस्वरूप, परम दर्शनीय परमात्मा की प्राप्ति होती है, जो कि मानव-जीवन के लिए एक अमूल्य निधि है। अपनी त्रुटि के लिए दुःख अनुभव करते हुए पश्चाताप से पाप क्षय तो नहीं होता, परन्तु पाप करने वाले व्यक्ति को पाप-फल से तो नहीं (क्योंकि ईश्वर के न्याय में क्षमा का स्थान नहीं है) अपितु पाप-भावना से मुक्ति मिल जाती है। आगे के लिये भविष्य में पाप नहीं किये जाने का दृढ़संकल्प ही मनुष्य को निष्पापता की ओर अग्रसर करता है और वह मनुष्य पवित्र हो जाता है।

पृष्ठ 5 का शेष-गर्भाधान संस्कार

4. अपसख्या तनूः-स्त्री पति के प्रतिकूल न चले।

ये बीस मन्त्रों के पाँच-पाँच का एक पंचक है। इसलिए इन्हें चार भागों में बांटा गया है। एक-एक पंचक के पाँचवे मन्त्र में सामूहिक रूप में उन्हें सम्बोधन किया गया है अर्थात् सब दोषों का निवारण हो।

सन्तान का पिता संसार की सब संशोधक शक्तियों से प्रार्थना करता है ये सब अवगुण दूर हो और समाज के लिए एक उत्कृष्ट सन्तान देने में सहायक हो। क्योंकि इन संस्कारों का उद्देश्य ही समाज के लिए उत्कृष्ट सन्तति की कामना है।

इसी प्रकार अन्त के सात मन्त्रों का भावार्थ है कि पति पत्नी प्रार्थना करते हैं कि सन्तान अक्षत हो, जरायु के साथ उत्पत्ति हो, और वह माता-पिता के साथ अपना जीवन बिताए। सन्तान के अंग प्रत्यंग कटे फटे न हो, सन्तान पुंस्त्व-शक्ति सम्पन्न हो।

सारांश यह है कि हमारी सन्तान अति बुद्धिमान रोग रहित शुभ गुण-कर्म-स्वभाव वाली हो। यही है उद्देश्य संस्कार का कि हमारी सन्तति सामान्य स्थिति से उत्पन्न हो, स्त्री दोषों से मुक्त हो और यह सन्तान समाज एवं राष्ट्र के उत्कृष्ट उत्थान के लिए सहयोगी हो।

आर्य समाज नवांशहर द्वारा विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित

आर्य समाज मन्दिर घास मण्डी नवांशहर की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को समर्पित जन कल्याण दिवस के अन्तर्गत आर्य समाज के अधिकारियों व विद्यालय की प्रबंन्ध कर्त्री सभा ने, विद्यालय के उन विद्यार्थियों को स्वेटर प्रदान किए जो आर्थिक रूप से कुछ कमजोर हैं। इस अवसर पर आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज ने कहा कि आर्य समाज का नियम ही है कि हमें अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए इसीलिए आर्य समाज नवांशहर लगभग 40 वर्षों से हर वर्ष कभी कम्बल, कभी स्वेटर तो कभी मैडिकल कैम्प इत्यादि लगाकर सबकी उन्नति में सहायक होता है। आर्य समाज के मन्त्री श्री जिया लाल ने कहा कि सबका उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है इसी ध्येय के साथ हम वर्षों से पूर्वजों के द्वारा चलाई परिपाटी को चला रहे हैं और चलाते रहेंगे इस अवसर पर विशेष रूप से निम्नलिखित व्यक्ति मौजूद रहे-सर्व. श्री ललित मोहन पाठक प्रधान नगर कौंसिल नवांशहर व प्रधान W.L. आर्य सी. सै. स्कूल नवांशहर, श्री विरेन्द्र सरीन जी वरिष्ठ उप प्रधान आर्य समाज नवांशहर, श्री कुलवन्त राय शर्मा जी कोषाध्यक्ष, आर्य समाज नवांशहर श्री जुगल किशोर दत्ता जी, सचिव आर. के. आर्य कालेज, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी वरिष्ठ सदस्य आर्य समाज नवांशहर, श्रीमती आरती कालिया प्रधानाचार्य W.L. आर्य सी० सै० स्कूल नवांशहर श्रीमान राजेन्द्र सिंह गिल जी, प्रधानाचार्य दोआबा आर्य सी० सै० स्कूल तथा विद्यालयों की समस्त प्रबन्ध कर्त्री सभा व अध्यापक व अध्यापिका वृन्द व छात्र छात्राएं उपस्थिति थे। W.L. Arya SS School, दोआबा आर्य, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, व दोआबा आर्य उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों को स्वेटर प्रदान किए ताकि विद्यार्थी ठंण्ड से बचाव करके स्वस्थ होकर अपनी पढ़ाई सही ढंग से कर सकें।

132वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर का 132 वां वार्षिक उत्सव 26 नवम्बर 2018 सोमवार से 2 दिसम्बर 2018 रविवार तक बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सोमवार 26 नवम्बर से स्वास्ति याग यज्ञ के द्वारा इस वार्षिक उत्सव का शुभारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। प्रातः 7:30 से 9:15 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन हुए। रात्रिकालीन सभा में 8:00 से 9:00 बजे तक भजन वे प्रवचन हुये। श्री राजेश अमर प्रेमी जी के दोनों समय भजन तथा आचार्य देवराज जी कपूरथला तथा आचार्य सुरेश शास्त्री जी के प्रवचन होते रहे।

मुख्य कार्यक्रम रविवार 2 दिसम्बर 2018 को प्रातः स्वास्ति याग यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ प्रारम्भ हुआ। श्री सोहन लाल सेठ तथा अन्य परिवारों ने यजमान बनकर यज्ञ को सम्पन्न किया। यज्ञ ब्रह्मा तथा अन्य विद्वानों ने सप्ताह भर बनने वाले सभी यजमान परिवारों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री राजेश अमर प्रेमी जी के मधुर भजनों से कार्यक्रम शुरू हुआ। प्रभु भक्ति तथा देशभक्ति के भजनों के द्वारा 26-11 को शहीद हुये शहीदों को श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। आचार्य सुरेश शास्त्री तथा आचार्य देवराज जी कपुरथला ने अपने प्रवचनों के द्वारा आर्य समाज की उन्नति तथा गृहस्थ आश्रम को सुन्दर तथा श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा दी। मंच का संचालन प्रिं. श्रवण भारद्वाज जी ने किया। आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री सोहन लाल सेठ जी ने आये हुए सभी विद्वानों, अतिथियों का धन्यवाद किया। आर्य समाज के महामन्त्री श्री रमेश कालड़ा, लभ्भू राम दोआबा सी. सै. स्कूल के अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा अन्य सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ तथा सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज अड्डा होशियारपुर

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में चल रहे चतुर्वेद महायज्ञ का समापन

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के 26वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी एवं अन्य आर्य जन पूर्णाहुति डालते हुये। चित्र तीन में आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी एवं अन्य आर्य समाज के सदस्य। नीचे चित्र चार में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य एवं अन्य सदस्य। चित्र पांच एवं छह में कार्यक्रम में उपस्थित आर्यजन।

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में 26वें वार्षिक उत्सव का समापन 51 कुंडीय चतुर्वेद परायण महायज्ञ के साथ रविवार को किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ओ३म की पताका फहरा कर किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, आचार्य सानन्द जी, आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी, महामंत्री हर्ष लखनपाल ने ध्वजारोहण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस मौके पर 108 दम्पत्तियों ने एक साथ यज्ञाग्नि में आहुतियां प्रदान की। मुख्य यजमान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्रीमती गुलशन शर्मा जी, पंजाब पुलिस के डीआईजी श्री सुरेन्द्र कालिया जी एवं श्रीमती किरण कालिया, पवन मल्होत्रा एवं रजनी मल्होत्रा, सौरभ अरोडा, पारूल अरोडा, रोहित अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल, वेद भाटिया, जगदीश भाटिया, नरेन्द्र मेहता, बीनू मेहता तथा 100 यजमान दम्पत्तियों ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न किया। आचार्य हंसराज शास्त्री एवं गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न करवाया।

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुरेन्द्र सिंह गुलशन ने बहुत ही सुन्दर ईश्वर भक्ति का भजन ओम है जीवन हमारा ओम प्राण आधार है, ओम है कर्त्ता विधाता ओम पालनहार है व देश भक्ति के गीत सुना कर सब को मंत्रमुग्ध किया। आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने यज्ञ प्रार्थना पूजनीय प्रभु हमारे भाव उज्जवल कीजिये, छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए सुना कर सभी याज्ञिक प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया। इस अवसर पर याज्ञिक परिवारों को आशीर्वाद देते हुये आचार्य सानन्द ने अपने उपदेश में कहा कि यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, यज्ञ सर्वव्यापक है, यज्ञ विष्णु है, यज्ञ से बढ़ कर कोई कर्म नहीं है। सभी कर्मों में यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म माना जाता है। यज्ञ हमें परोपकार की भावना सिखाता है। हम वेद के मंत्र इदं न मम का उच्चारण करते हैं अर्थात यह मेरा नहीं है। यह जो कुछ भी है वह सब ईश्वर का दिया हुआ है इसलिये हमें त्याग करना चाहिये। वेद गीता का यही सारांश है., मनुष्य के ज्ञान और पुण्य कर्म में अहंकार सबसे बड़ी बाधा होती है। उन्होंने लोगों को परिवार के बारे में बताया। परिवार व्यक्ति व समाज की महत्वपूर्ण धुरी होता है लेकिन आज परिवार की स्थिति चरमरा गई है। उन्होंने श्रद्धालुओं को यज्ञ के फायदे भी बताये। ऋषि मुनियों ने भी यज्ञ को नियमित करने की व्यवस्था की थी। इसकी दिव्य ऊर्जा से मनुष्य के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होता है।

आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और भगवान श्री कृष्ण नित्य संध्या करते थे। हम उनके अनुयायी उनके चरणों के अंतर्गत कार्य करें तो देश नित्य प्रति उन्नति को प्राप्त होगा। आर्यावर्त वासियों की संस्कृति गरिमा चरित्र बल आत्मबल देश भक्ति सब यज्ञ में समाहित होता है। आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व प्रत्येक घर में नित्य प्रति हवन हुआ करता था इसीलिये हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था। ऋषि दयानन्द ने वेद की ओर एवं यज्ञ की ओर लौटने के लिये लोगों को उत्साहित एवं प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा देश को आंतरिक रूप से खोखला कर रही है। इन सब के खिलाफ आर्य बुद्धिजीवी लोगों को आह्वान करना चाहिये। आर्य समाज के मंत्री हर्ष लखनपाल ने कहा कि हमें मानव समुदाय को ईश्वर जीव प्रकृति इन 3 अनादि पदार्थों को माननीय अनिवार्य कर्त्तव्य होना चाहिये। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, कपूर चंद गर्ग कपूरथला, सागर चंद ठुकराल, स्वतंत्र कुमार जंडियाला गुरु को सम्मानित किया गया। इन सभी ने अपने विचार में कहा कि आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में आकर ऐसा दृश्य जहां पर एक साथ 108 दम्पत्तियों के अलावा सैंकड़ों लोग के साथ बैठ कर यज्ञ किया जोकि सच में अदभुत कार्य किया है। यज्ञ जोड़ने की भावना करता है। आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के अधिकारी बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर जो यजमान परिवार उपस्थित हुये उनमें श्री सुशील कालिया पार्षद, यशपाल भगत, ऊषा रानी, राहुल भगत, अंजलि भगत, राम बहादुर थापा, जे.के.भंडारी, सुरेश भंडारी, सुरेश ठाकुर, अनु ठाकुर, मनप्रीत ठाकुर, किरण ठाकुर, रजनीश सचदेव, अमन कपूर, ईशा कपूर, मनोज कुमार, निशा, प्रदीप चोपड़ा, बबिता चोपडा, इंजीनयर एस.पी. सहदेव, स्नेह लता, विजय ठाकुर, संतोष ठाकुर, डा.जीवन दस्सन, बरखा दस्सन, रोहित मिश्रा, दीपिका मिश्रा, राजीव कुन्दरा, नरेन्द्र सूद, ममता रानी, बलराज मिश्रा, सुचित्रा मिश्रा, वीरेन्द्र बहल, नीतू बहल, सुनील मल्होत्रा, संगीता मल्होत्रा, निर्मल आर्य, सुरेन्द्र आर्य, रंजना आर्य, अशोक कुमार, संजीव कुमार शर्मा, पंकज कालरा, पूनम दुग्गल, श्रीमती सुशीला भगत, हिन्द पाल सेठी,रजनी सेठी, अंकुर गोयल, रमेश चौधरी, नूतन चौधरी, सुरेन्द्र खन्ना, रेवा खन्ना, मोहित खन्ना, प्रीति खन्ना, राजेन्द्र शर्मा, भारती शर्मा, रजनीश शर्मा, सुनीता शर्मा, पंकज धीर, नेहा धीर, सुनीता भाटिया, डिम्पल भाटिया, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, केदारनाथ शर्मा, मीनू शर्मा, देवराज, राज रानी, यशपाल भगत, उषा रानी भगत, भूपेन्द्र सिंह सचदेवा, रानी सचदेवा, जे.के. गुप्ता, सुधा गुप्ता, हरविन्द्र सिंह, रजनी, किरण शर्मा, विमला, सुभाष मेहता, प्रोमिला मेहता, राजेन्द्र कुमार, उर्मिल शर्मा, सुनील मिश्रा, गौरव आर्य, कनु आर्य, सुभाष आर्य, इन्दु आर्या, दया राम, विक्रम पुरी, हरविन्द्र सिंह बेदी, हरविन्द्र कौर बेदी, अमित चावला, मनीषा चावला, मनप्रीत ठाकुर, किरण ठाकुर, रवि कुमार, अमित शर्मा, मीनू शर्मा, जितेन्द्र आर्य, सानिया आर्य, अमन आर्य, वंश आर्य, गौरव आर्य, सुदर्शन आर्य, अशोक मल्होत्रा, प्रवीण लखनपाल, निखिल लखनपाल, चौधरी हरिचंद, ललित मोहन कालिया, सनी लता कालिया, अरुण कुन्दरा, दिवाली कुन्दरा, देवराज, वरूण पुरी, दिनेश कुमार, बिट्टू उमा शुक्ला, रितिका शर्मा, रोहित शर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विपिन शर्मा, आर्य समाज कबीर नगर, आर्य समाज गांधी नगर, आर्य समाज राम नगर, आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़, आर्य समाज पक्का बाग, आर्य समाज माडल टाउन, आर्य समाज बस्ती गुजां, आर्य समाज सुल्तानपुर, आर्य समाज कपूरथल, आर्य समाज जंडियाला गुरु के अधिकारी उपस्थित थे।

-रणजीत आर्य प्रधान आर्य समाज

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।